328hi26B

26

प्रारंभिक बचपन में वैकासिक संरचना

जन्म से लेकर पूर्णत् विकसित वयस्क बनने तक एक मानव के विकास के विषय ने युगों से लोगों को आकर्षित किया है। यह ज्ञान न केवल स्वयं को समझने में उपयोगी है बल्कि यह बच्चे के विकास के लिए मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आपके लिए संभव होगा:

- मानव जीवन काल के स्तरों की सूची तैयार करना;
- विकास की विभिन्न प्रक्रियाओं की रूपरेखा तैयार करना;
- वद्धि तथा विकास के प्रतिमानों (पैटर्न) का वर्णन करना;
- विकास को प्रभावित करने वाली विभिन्न विशेषताओं (लक्षणों) का वर्णन करना; तथा
- प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चे की विशेषताओं का उल्लेख करना।

26.1 जीवन काल के स्तर

सम्पूर्ण जीवन काल के संदर्भ में यदि हम इसके विभिन्न स्तरों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे तो हम मानव विकास को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे। मानव जीवन काल को निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

1. प्रसवपूर्व अवधि– गर्भधारण से जन्म तक

2. नवजात की अवधि– जन्म से एक महीने तक
3. शैशव– 1 महीने से 2 वर्ष तक
4. प्रारम्भिक बाल्यावस्था – 2 वर्ष से 6 वर्ष तक
5. मध्य बाल्यावस्था– 6 वर्ष से 11 वर्ष तक
6. किशोरावस्था– 11/12 वर्ष से 18/19 वर्ष तक
7. प्रारम्भिक वयस्कावस्था– 18/19 वर्ष से 40 वर्ष तक
8. अधेड़ आयु– 40 से 60 वर्ष तक
9. वद्धावस्था – 60 से ऊपर

26.2 विकास के प्रतिमान

विकास, जिसका वास्तविक रूप से अर्थ अनेक प्रक्रियाओं शारीरिक, सामाजिक, तथा संज्ञानात्मक के मध्य जटिल अंतक्रियाओं के परिणाम है।

1. **शारीरिक (जैविक) प्रक्रियाएं:** व्यक्ति के रूप–रंग में परिवर्तन प्राकतिक है। इन प्रक्रियाओं में शारीरिक परिवर्तन शामिल है। हमारी आनुवंशिक विरासत, शारीरिक इंद्रियों का विकास, क्रियात्मक कौशलों यथा साइकलिंग, ड्राइविंग, लेखन आदि में निपुण होना, हार्मोनल परिवर्तन जैसे मूछें आना, यौनारंभ में भार का बढ़ना, ये सब विकास में जैविक प्रक्रियाओं की भूमिका को दर्शाते हैं।
2. **ज्ञानात्मक प्रक्रियाएं:** इन प्रक्रियाओं में विचारों, बुद्धिमत्ता तथा बच्चे की भाषा में परिवर्तन शामिल हैं। प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, जानना, समझना, समस्या समाधान करना,याद करना, कल्पना करना, ये सभी ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को दर्शाते हैं।
3. **सामाजिक प्रक्रियाएं:** इन प्रक्रियाओं में अन्य लोगों के साथ बच्चे के सम्बन्धों में, उसकी भावनाओं तथा व्यक्तित्व में परिवर्तन शामिल हैं। शिशु की पहली मुस्कान, मां तथा बच्चे के मध्य लगाव का विकास, बच्चे द्वारा अपने सामान, पारी तथा अन्यों के साथ खेल में बांटना सीखना; ये सब सामाजिक प्रक्रियाओं को दर्शाते हैं।

स्वयं करके देखें: बच्चे में ज्ञानात्मक, सामाजिक तथा जैविक प्रक्रियाओं के 10 उदाहरणों की एक सूची तैयार कीजिए।

पाठगत प्रश्न 26.1

निम्नलिखित का मिलान करें:

क	ख
(i) नवजात	(क) लम्बाई में वद्धि
(ii) किशोरावस्था	(ख) 2-6 वर्ष

(iii) प्रारम्भिक व्यस्कावस्था	(ग) 18/19 वर्ष से 40 वर्ष
(iv) प्रारम्भिक बाल्यावस्था	(घ) दोस्त बनाना
(v) ज्ञानात्मक प्रक्रिया	(ङ) जन्म–एक महीने तक
(vi) सामाजिक प्रक्रिया	(च) देखना तथा पलटना हिलना
(vii) जैविक प्रक्रिया	(छ) 11–12 वर्ष से 18–19 वर्ष

26.3 प्रारम्भिक बाल्यावस्था में वद्धि तथा विकास

वद्धि तथा विकास सम्पूरक प्रक्रियाएं हैं। वद्धि शरीर में मात्रात्मक परिवर्तनों को दर्शाती है जैसे भार तथा लम्बाई। इसके विपरीत विकास से तात्पर्य गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तन शामिल हैं (यथा भाषा ग्रहण)।

विकास को ''सुव्यवस्थित सुसंगत परिवर्तनों की प्रगतिशील श्रंखला'' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

विभिन्न प्रकार के विकासात्मक परिवर्तन विभिन्न सिद्धान्तों का अनुसरण करते हैं। इनमें से कुछ सिद्धान्त निम्नानुसार हैं:

1. वद्धि तथा विकास सुव्यवस्थित अनुक्रम का अनुसरण करते हैं
2. प्रत्येक बच्चा सामान्यत: अनेक स्तरों से गुजरता है तथा प्रत्येक की अपनी अनिवार्य विशेषताएं होती हैं।
3. विकास की दर व प्रतिमान में व्यक्तिगत रूप से अन्तर होता है।
4. यद्यपि मनुष्य एकीकत इकाई के रूप में विकसित होता है किन्तु उसके शरीर का प्रत्येक भाग भिन्न दर से विकसित होता है। मूल रूप से विकास की दर की दो श्रंखलाएं होती हैं:

   (क) मस्तकाभोमुखी (सिफिलोकोडल) अर्थात सिर से पैर तक विकास प्रक्रियाएं। इस प्रकार पहले सिर व मस्तिष्क विकसित होगा।

   (ख) समीप-दूराभिमुखी (प्रॉक्सीमोडिस्टल) केन्द्र से अन्तिम छोरों तक (साइड की ओर) इस विकास के अंतर्गत बच्चा सर्वप्रथम अपनी रीढ़ पर नियंत्रण प्राप्त करता है उसके बाद हाथ व उंगलियों पर।

5. विकास अनिवार्य रूप से परिपक्वन तथा सीखने के मध्य अंतक्रिया का परिणाम है। जहां परिपक्वन का अर्थ ''व्यक्ति के अनुवंशिक प्रतिभा में प्रस्तुत उपयुक्त सम्भावित विशेषताओं'' से है वहीं सीखने से तात्पर्य संबंधित प्रयासों से है, वे परिवर्तन जो अनुभव तथा प्रयास के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं।

टिप्पणी

स्वयं करके देखें:

दो तथा चार वर्ष की आयु के बच्चों के स्थूल (सधन) गतिक कौशलों (यथा दौड़ना, उछलना, सीढ़िया चढ़ना, कूदना) तथा सूक्ष्म गतिक कौशलों (ग्रहण करना, चिपकाना, चम्मच से खाना, गिठांक बांधना, बाल बनाना, बटन लगाना, बटन खोलना आदि) का अवलोकन करें। इन कौशलों के विकास के क्रम की पहचान कीजिए। इन कौशलों में प्रत्येक में विकास में परिपक्वन तथा सीखने की तुलनात्मक भूमिका का पता लगाइए।

26.4 वद्धि तथा विकास को प्रभावित करने वाले कारक

1. **वंशानुगतः** वंशानुगत से तात्पर्य जो हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त होता है। इससे इस तथ्य का निर्धारण होता है कि हम कितने लम्बे या भारी हो सकते हैं। इस प्रकार, वंशानुगत हमारे शरीर के आकार, हमारी बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ अनेक शारीरिक, मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक, सामाजिक व्यवहारात्मक गुणों का निर्धारण करता है।

2. **प्रसवपूर्व वातावरणः** गर्भावस्था के दौरान का वातावरण, बाद के विकास का एक महत्वपूर्ण कारक होता है। यदि मां को इस दौरान अच्छा पोषण प्राप्त नहीं होता है या वह भावात्मक रूप से दुखी रहती है या धूम्रपान या शराब, या किसी अन्य दवा का सेवन करती है या विशिष्ट प्रकार की बीमारियों से पीड़ित है तो इन तथ्यों का बच्चे के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

3. **पोषणः** एक बच्चे के स्वस्थ विकास के लिए उचित पोषण अनिवार्य है। एक कुपोषणयुक्त बच्चे का विकास या तो अवरुद्ध या विक्रत होता है।

4. **मानसिक स्तरः** तीव्र बुद्धि का संबंध तीव्र विकास से है जबकि निम्न बुद्धि का संबंध विकास के विभिन्न पहलुओं में पिछड़ने से है। शरीर व बुद्धि का आपस में गहरा संबंध है जैसे कहावत भी है कि ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ बुद्धि का वास होता है''

5. **घर का भावात्मक वातावरणः** यदि घर में अत्यधिक द्वेष/लड़ाई होती है या बच्चे को पर्याप्त स्नेह या ध्यान नहीं दिया जाता है या बच्चे को शारीरिक/मानसिक रूप से उत्पीड़ित किया जाता है तो इससे बच्चे के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। परिवार के अन्य सदस्यों के साथ आपके स्नेह, धैर्य या आदरपूर्ण व्यवहार से बच्चे पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

6. **बच्चे का स्वास्थ्यः** यदि बच्चा बार–बार बीमार पड़े या किसी विकति का शिकार हो जाता है या अपंग है या अव्यवस्थित अंतःस्त्रावी क्रिया, तो उससे बच्चे का विकास प्रभावित होगा। किसी प्रकार की आन्तरिक शारीरिक विकति भी बच्चे के विकास को प्रभावित करती है।

7. उद्दीपन का स्तरः एक वातावरण द्वारा उपलब्ध उद्दीपन की मात्रा, वातावरण के अन्वेषण के अवसर, अन्य लोगों के साथ अन्तःक्रिया के अवसर– सभी विकास की दर को प्रभावित करते हैं। उद्दीपन से तात्पर्य कोई भी वस्तु जो व्यक्ति को क्रिया करने पर मजबूर करती है।

8. सामाजिक-आर्थिक स्थितिः यह बच्चे को प्राप्त होने वाले पोषण, उद्दीपन, सुविधाओं तथा अवसरों के प्रकार, को निर्धारित करती है और इसलिए उस बच्चे के विकास की दर को प्रभावित करता है।

9. यौनः सभी बच्चे विकास के समान क्रम का अनुसरण करते हैं। बहरहाल, कुछ कौशल लड़कियों में (जैसे भाषा विकास) जल्दी विकसित होते हैं तो कुछ लड़कों में। यौन भी एक कारक है जो कभी–कभी विकास के कुछ पहलुओं में बच्चे की सम्भावनाओं (क्षमताओं) का निर्धारण करता है जैसे लड़के लड़कियों की अपेक्षाकत लम्बे एवं वचन में अधिक भारी होते हैं।

पाठगत प्रश्न 26.2

बताएं कि निम्नलिखित वाक्य सत्य हैं या असत्यः

1. विकास हमेशा एक ही दर पर होता है। सत्य/असत्य
2. विकास केवल वातावरण से ही प्रभावित होता है। सत्य/असत्य
3. बद्धि और विकास दोनों एक ही अवधारणा है। सत्य/असत्य
4. सामान्यतः विकास एक ही क्रम का अनुसरण करता है। सत्य/असत्य
5. गर्भवती महिला का स्वास्थ्य बच्चे के विकास को प्रभावित करता है। सत्य/असत्य
6. दाम्पत्य विकति बच्चे के विकास को प्रभावित कर सकती है। सत्य/असत्य
7. जितना अधिक बच्चे को वातावरण के समीप जाने दिया जाएगा, बच्चे का विकास उतना ही कम होगा। सत्य/असत्य
8. हमारे सीखने की क्षमता का निर्धारण वंशानुगत आधार पर होता है। सत्य/असत्य

26.5 प्रारम्भिक बाल्यावस्था में विकास की विशेषताएं

जैसे कि पहले उल्लेख किया जा चुका है प्रारम्भिक बाल्यावस्था की अवधि 2 वर्ष से 6 वर्ष की आयु के मध्य की होती है। कभी–कभी इस अवधि को प्रग्विद्यालयी अवधि भी कहते हैं। इस स्तर में बच्चे अधिक आत्मनिर्भर हो जाते हैं, अपना ध्यान रखने लगते हैं, भाषा को सीखने लगते हैं, समूह का भाग बनने लगते हैं, अधिक सुव्यवस्थित हो जाते हैं,

स्कूल की तैयारी के कौशल विकसित करने लगते हैं (निर्देशों का अनुपालन करना, अक्षरों को पहचानना आदि) तथा उच्च स्तर का स्वःनियंत्रण प्राप्त कर लेते हैं।

(क) ज्ञानात्मक विकास के लक्षण

- यह विश्वास करना कि संसार विद्यमान है, चाहे वह स्वयं उसे देख न सके (वस्तु स्थायित्व)
- अन्यों का परिप्रेक्ष्य (विचार) को न देख पाना (आत्मकेन्द्रित)
- तर्कसंगत विचारों का अभाव।
- यह धारणा रखना कि सभी वस्तुएं (जीवित तथा अजीवित) में जीवन तथा भावनाएं विद्यमान हैं।
- कल्पनाओं में लिप्त रहना तथा अपनी धारणाओं के साथ खेलना।
- सतही रूप से नजर आने वाली अवधारणाओं से सरलता से भ्रमित होना।
- अकेन्द्रित ध्यान
- सीमित स्मरण शक्ति
- सामान्य संबंधों के विषय में भ्रमित
- रंग, आकार, आकति, संख्या, दिनों आदि की मूल अवधारणा को ग्रहण करना।
- उच्च स्तर की उत्सुकता
- दो शब्दों से पूरे वाक्य तक तथा व्याकरणिक प्रयोगों के साथ भाषा में परिवर्तन।

(ख) शारीरिक विकास के लक्षण

दो वर्ष की आयु परः एक बच्चा

- एक बच्चे का भार 23-30 पाउंड, तथा लम्बाई 32-35 इंच होती है।
- आंतों की क्षमता तथा मूत्राशय पर नियंत्रण
- दौड़ सकता है, बॉल को लात मार सकता है तथा 3 क्यूब की मंजिल बना सकता है।

2-3 वर्ष की आयु पर

- बच्चे का भार 32-33 पाउंड हो जाता है तथा उसकी लम्बाई 37-38 इंच हो जाती है।
- सीढ़ियों से छलांग लगा सकता है, ट्राइसाइकल चला सकता है, एक आठ क्यूब वाला टावर खड़ा कर सकता है आदि।

3-4 वर्ष की आयु पर

- बच्चे का भार 30-40 पाउंड तथा उसकी लम्बाई 40-41 इंच हो जाती है।

- घर में अनेक दैनिक कार्यों में आत्म निर्भर हो जाता है जैसे कपड़े पहनना।
- एक पैर पर खड़ा हो सकता है ऊपर–नीचे छलांग लगा सकता है, गोल व क्रास के आकार को बना सकता है।

4-5 वर्ष की आयु पर

- बच्चे का वजन 42-43 पाउंड तथा लम्बाई 43-44 इंच हो जाती है।
- परिपक्व मोटर नियंत्रण आ जाता है, स्किपिंग, स्वयं कपड़े बदलना, लम्बी छलांग लगाना, चौकोर या त्रिकोण आकार को बना पाता है।

(ग) संवेगात्मक विकास के लक्षण

2 वर्ष की आयु पर

- झल्लाहट भरा क्रोध दर्शाता है
- नए शिशुओं (यदि हों) से नाराज रहता है।
- नकारात्मक प्रवति होती है।

2-3 वर्ष की आयु पर

- अन्यों से अलग होने का भय होता है ।
- नकारात्मक प्रवति होती है।
- क्रोध, दुख तथा हर्ष के लिए भिन्न भिन्न चेहरे बनाता है
- विनोद प्रवति उत्पन्न करता है।

3-4 वर्ष की आयु पर

- माता पिता के प्रति स्नेह दर्शाता है
- जननिक हस्तलाथव में आनन्द प्राप्त करता है
- अंधेरे, राक्षस, चोट आदि का काल्पनिक भय होता है।

4-5 वर्ष की आयु में

- जिम्मेदारी तथा ग्लानि के अहसास का अनुभव करता है
- उपलब्धियों में गर्व का अनुभव करता है।

(घ) सामाजिक विकास के लक्षण

2 वर्ष की आयु पर

- जो करने को कहा जाए उसका विपरीत करता है

2-3 वर्ष की आयु पर

- माता पिता की क्रियाओं की नकल करता है

- आश्रित होता है, लिपटता है
- स्वत्वबोधक होता है
- बच्चें के साथ खेलना पसंद करता है

3-4 वर्ष की आयु में

- दूसरों के साथ बांटना सीखता है
- अन्य बच्चों के साथ समन्वय (सहयोग) के साथ खेलता है
- नर्सरी स्कूल में प्रवेश करता है
- अपने समान 'लिंग अभिभावक' को पहचानने लगता है
- काल्पनित मित्र बना लेता है
- मानव शरीर में रुचि उत्पन्न होने लगती है
- अपनी यौन भूमिका क्रियाएं करने लगता है

4-5 वर्ष की आयु में

- अन्य बच्चों के साथ खेलने लगता है
- प्रतिस्पर्धी हो जाता है
- उचित यौन क्रियाओं को वरीयता देता है।

टिप्पणी: यह याद रखा जाना चाहिए कि ये सूचीबद्ध क्रियाएं मात्र उदाहरण स्वरूप हैं। विकास की अन्य अनेक अभिव्यक्तियां हैं तथा ये सभी एक दूसरे से संबंधित हैं।

पाठगत प्रश्न 26.3

बताएं कि विकास के किस क्षेत्र में प्रत्येक निम्नलिखित आते हैं:

1. समन्वय (सहायक) खेल
2. ग्लानी
3. वस्तु स्थायित्व
4. यौन भूमिकाएं सीखना
5. अंधेरे का भय
6. काल्पनिक मित्र
7. उछलना व कूदना
8. काटना व चिपकना

आपने क्या सीखा

प्रसवपूर्व
नवजात
शैशव
प्रारम्भि बाल्यावस्था
मध्य बाल्यावस्था
किशोरावस्था
वयस्कावस्था
मध्य वयस्कावस्था
वद्धावस्था

= **जीवन चक्र के स्तर**

विकास की प्रक्रियाएं =
जैविक
ज्ञानात्मक
सामाजिक

(i) सभी विकास संव्यवस्थित क्रम का अनुसरण करते हैं।
(ii) विकास में व्यक्तिगत स्तर पर अन्तर
(iii) शरीर के विभिन्न भाग भिन्न–भिन्न गति से विकसित होते हैं।
(iv) परिपक्वन तथा अधिगम के मध्य अंतक्रिया के परिणामस्वरूप विकास होता है।
(v) प्रत्येक बच्चे विकास के अनेक स्तरों से गुजरता है।

= **वद्धि तक विकास के सिद्धान्त**

वद्धि तथा विकास को प्रभावित करने वाले कारक =
बुद्धि
वंशानुगतता
प्रसवपूर्व वातावरण
पोषण
भावात्मक परिस्थिति
स्वास्थ्य
सामाजिक आर्थिक स्थिति
यौन
उद्दीपन का स्तर

सामाजिक
भावात्मक
ज्ञानात्मक
शारीरिक

= **प्रारम्भिक बाल्यावस्था की विशेषताएं**

पाठान्त प्रश्न

1. वद्धि तथा विकास के सिद्धान्तों की सूची बनाइए।
2. ऐसे दो बच्चों को लीजिए जो अपनी आयु से बड़ा है तथा दूसरा अपनी आयु के अनुसार छोटा है। उनके विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान कीजिए।
3. एक तीन वर्ष की आयु वाले बच्चे का एक हफ्ते के लिए मूल्यांकन कीजिए तथा उसकी सामाजिक, भावात्मक, शारीरिक तथा ज्ञानात्मक विकास की स्थिति की एक सूची तैयार कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

26.1

(i) (ङ) (ii) (छ) (iii) (ग) (iv) (ख) (v) (च)
(iv) (घ) (vii) (क)

26.2

(1) गलत (2) गलत (3) गलत (4) सही (5) सही
(6) सही (7) गलत (8) सही

26.3

1. सामाजिक विकास
2. भावात्मक विकास
3. ज्ञानात्मक विकास
4. सामाजिक विकास
5. भावात्मक विकास
6. सामाजिक विकास
7. शारीरिक विकास
8. शारीरिक विकास